# जोड़ती है

- सतीश "बब्बा"

मुझे देखते ही वह चौंक गया। शायद मेरे परिवार को बिखेरने में पूर्णतः उसका एक अहं रोल था। और बिखरे परिवार से उसने मौका देख – देखकर, फायदा भी खूब उठाया था।

अब तो किसी को भी नहीं था कि, अब हमारा भाई – भाई का खानदान होगा और हम कभी भी एक छत के नीचे बैठेंगे!

कल्लू ने तो वह बीज बोया था कि, एक क्या, हम एक दूसरे की शक्ल भी नहीं पसंद करते थे। और कल्लू ने उसका फायदा उठाकर, अपना कभी का, उल्लू सीधा कर लिया था।

जब बड़े भैया रीवा से अपर्णा को ब्याह कर अपनी बहू बनाकर लाए, तब अपर्णा को इस बात का पता चल गया कि, उनके बाराती और घर में रिश्तेदारों के बीच, कोई अपना नहीं है। जो हमारे चूल्हा और घिनौची का सदस्य हो। उसने देखा कि, चंद जमीन के टुकडे के लिए, घर के एक कोने के लिए यह भाई – भाई एक दूसरे के खून के भूखे हैं।

एक दिन मैंने फेसबुक पर एक लड़की की फ्रैंड रिक्वैस्ट को मंजूरी दे दी थी। कौतूहल वश न जाने क्यूँ? उसका नाम अपर्णा था। मैं उसे बिल्कुल भी नहीं जानता था।

एक दिन अपर्णा ने मैसेंजर पर चरण स्पर्श का मैसेज दिया। मैं नहीं जानता था कि, यह है कौन? लेकिन उसके माँग के सिंदूर को उसकी फोटो में देखकर, स्वाभाविक तौर पर, सौभाग्यवती का आशीर्वाद दे दिया।

अपर्णा की प्रोफ़ाइल देखकर भी नहीं जान सका था। क्योंकि जब कोई मतलब ही नहीं था, तो उसे, उसके और परिवार के बारे में भला मैं कैसे जान सकता था।

अब तो रोज मैसेज आने लगे, वह सुबह चरण वंदन करती और मैं आशीष देता।

उसके प्रोफ़ाइल में उसके पति का जिक्र ही नहीं था, सिर्फ विवाहित लिखा था। और स्थान में रीवा। इतना बड़ा रीवा, कहीं का कोई भी हो सकती है।

मैंने जानकारी मैसेंजर में मांगी तो उसने वाट्साप नंबर मांगा और वहीं पर बताने के लिए कहा।

जब वाट्साप पर बातचीत शुरू हुई और मैं फिर उसके बारे में जानना चहा, तब उसने लिखा, "क्या मैं आपकी बहू नहीं हो सकती?"

मैंने लिखा, "क्यों नहीं!"

उसने लिखा, "बहू एक बेटी भी तो हो सकती है!"

मैंने लिखा, "तुम ऐसा क्यों लिखती हो, मैं नहीं जानता। लेकिन तुम मुझे बहुत प्यारी, अपनी बेटी सी लगती हो!"

उसने लिखा, "बस यही प्यार, अपनापन ही तो मागती हूँ, आपसे!"

मुझे आज उस नारी शक्ति का एहसास हो रहा था, जो टूटे हुए दिल को जोड़ सकती है। अनजाने रिश्ते निभा भी सकती है।

और मुझे अंदर – अंदर डर भी लग रहा था। पता नहीं यह कौन है? क्यों सुबह – सुबह, पहले मेरा चरण वंदन करती है? कभी बहू, कभी बेटी सी लगती है!

एक अनजाना भय भी मुझे सता रहा था कि, कहीं यह मुझे फँसा तो नहीं रही है। फिर उस डर को मैं दर किनार कर देता। अगर फंसाने का इरादा, बुरा इरादा होता तो, अब तक अश्लील हरकतें करने लगती और कुछ डिमांड करती। ऐसा एक बार मेरे साथ हो भी चुका था।

फिर अपर्णा की हरकतें ऐसी हैं कि, वह मुझे अच्छी तरह से जानती है। ऐसा उसके वार्तालाप से लगता था। और, यह कौन हो सकती है, मैं परेशान था।

उसके नाम की व्याख्या करता "अपर्णा" अपर्णा तो पार्वती का नाम तब पड़ा था, जब हिमवान पुत्री ने निराहार रहकर शिवाराधन किया था। कहीं यह लड़की... नहीं, हाँ यथा नाम, तथा गुण होता है।

उससे मुझे प्रेम हो गया था, जो एक पिता को बेटी से होता है। वह मुझे जब चाहती, मजबूर कर देती, सुबह चारपाई छोड़ने के लिए। सुबह जागने के लिए। समय से नहाने के लिए, समय से खाना खाने के लिए। वह पूछ लेती, "खाना खाया चाचा जी, कि, नहीं!"

कभी चाचा कहती, कभी अंकल कहकर हंसने लगती। फिर गंभीर होकर कहती, "अगर आप नहीं खाते तो मैं भला क्यों खाऊ!"

मैं परेशान होने लगता कि, आखिर यह है कौन? कभी कविता लिखकर अपनापन जताती, तब वह मेरी बूढ़ी दादी की याद कराती थी।

'आखिर तुम हो कौन?' मेरे प्रश्न को टाल जाती।

उस दिन जब मैं बीमार हुआ था, तो दवा लेने में मेरी लापरवाही का उसे पता कैसे चला। वह किसी जासूस से कम नहीं थी।

उसने बहुत ही अधिकार से वाट्साप पर लिखा था कि, 'यदि दवा लेने, और स्वास्थ्य के प्रति जरा भी लापरवाही की, तो मैं रूठ जाऊँगी और फिर कभी भी बात नहीं करूँगी। क्या आप अपनी बेटी की भी बात नहीं मानेंगे?"

मैं उस अनजान रिश्ते से डरकर वही करता जो वह कहती।

एक दिन पता नहीं कहाँ से, मुँह अँधेरे, एक लम्बा घूँघट डाले एक रूपवती बहू, मेरे दरवाजे पर आई, मैं लाइट की रोशनी में, अपर्णा के आदेश पर योग के बाद कुर्सी में बैठे अखबार देख रहा था। वह बहुरिया मेरे पैरों में अपना माथा रख दिया और चली गई।

उसने वहीं बैठी मेरी पत्नी के पैरों में भी माथा रख दिया था।

मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा, वह कुछ नहीं बोली और चुपके से उस नवयुवती बहुरिया का पीछा करने चली गई। वह मेरे बड़े भैया के घर में घुस गई थी।

लौटकर मेरी घरवाली ने मेरे भतीजे का दुलार वाला नाम लेकर कहने लगी, "लगता है गुड्डा की दुलहिन है। अगर उनके मन से आई है तो जरूर यह उनकी कोई चाल होगी। और अगर अपने मन से आई तो बहू की खैर नहीं!"

तभी फोन पर मैसेज आया। अपर्णा ने लिखा था कि, "यहीं तो मात खा गई इंडिया! जब महतारी – बाप अपनी ही बिटिया को नहीं पहचान सके!"

मैं सन्न रह गया। मैंने लिखा, "अपर्णा तुम हो!"

अपर्णा का जवाब था, "हाँ, चाचा जी, आपकी बहू और बिटिया!"

बड़े भैया के घर में हलचल हो रही थी, लेकिन समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

तभी एक बारह वर्षीय बालिका, पड़ोसिन की बेटी चंदा निकली, तो मैंने पूछ लिया, "चंदा, कहाँ से आ रही हो, सुबह – सुबह! और यह हल्ला कहाँ हो रहा है?"

चंदा ने बताया, "भाभी दो दिन से कुछ खाया – पिया नहीं है। उनको पहले बड़े दादा जी, और गुड्डा भैया मना रहे थे, फिर पता नहीं कौन सी बात है, भैया और दादा जी ने मान लिया है। तो भाभी ने पानी पी लिया है!"

मैंने चंदा से पूछा, "कौन सी बात?"

चंदा ने कहा, "पता नहीं, मैं नहीं जानती!"

शाम हुई, फिर रात हुई। और हम लोग खा पीकर सोने की तैयारी कर रहे थे। कि, तभी दरवाजे में दस्तक हुई।

मैंने दरवाजा खोला। सामने अपर्णा और मेरा भतीजा गुड्डा और बड़े भैया – भाभी, सभी खड़े थे। बात समझ में आ रही थी। दरवाजा खुलते ही सभी अंदर आ गए।

मैंने भाभी और भैया के पैर छुआ। मेरी घरवाली ने भी जेठानी के पैर छुआ। और मैंने अपर्णा को पैर छूने से पहले पकड़कर उसका माथा चूम लिया और ढेर सारी आशीषें दे डाली।

मेरी पत्नी अपर्णा को बार – बार चूम रही थी, जैसे वह अभी दो साल की बच्ची हो। गुड्डा ने हमारे पैरों में माथा रख दिया।

अपर्णा ने बड़े अपनेपन से, अधिकार से कहा, "चाचा जी, यह आपकी बहू, बेटी के अरमानों की बात है। कल हमारे शादी की सालगिरह में शामिल हों और सभी लोग सुबह से आकर सारा काम सँभलना होगा। आपके भाभी – भैया बूढ़े हो गए हैं। वह कुछ भी नहीं कर सकते। आप भी तो सास – ससुर हैं! आप आदेश करते रहेंगे और मैं और मेरा देवर सब कर सकते हैं!"

और अपर्णा हाथ पकड़कर हमारे बेटे को ले कर चल दिया। क्यों नहीं आखिर देवर पर तो भाभी माँ का पूरा अधिकार जो होता है।

"चाचा जी!" शहद से मीठे अपर्णा के शब्दों को सुनकर, मानो मैं सोते से जागा होऊँ!

अपर्णा ने कहा, "चाचा, कल्लू जी गए!"

अपर्णा मुझसे लिपट गई थी। मैंने उसे कलेजे से लगा लिया और माथा चूम लिया।

अपर्णा ने कहा, "अब मैं आ गई हूँ, घर हमारा, परिवार हमारा और निर्णय भी हमारा होगा!"

मैं और मेरी पत्नी, अपर्णा को इतने सारे आशीर्वाद दिए, जिसे मैं अब बता नहीं सकता।

तभी मेरे बड़े भैया और भाभी ने कहा, "छोटे, जहाँ तुझे घर चाहिए, वहाँ ले लेना। जो खेत चाहना हो ले लो, और अब हमसे दूर मत होना!"

मैं और मेरी घरवाली रो पड़े, और मेरे बेटे ने कहा, "दादा जी, हमें आपका आशीर्वाद चाहिए और कुछ नहीं!"

अपर्णा अपना मक़सद पूरा होते देख खुशी के छलक आए आँसू पोंछने लगी थी। और उसका देवर उसके आँचल तले स्वर्ग के सुख का आनंद ले रहा था।

मैं समझ रहा था कि, एक नारी ही है जो जोड़ती है।

अपर्णा और हमारा बेटा, देवर – भौजाई सभी कामों को, जिस लगन से कर रहे थे। उसका बयान करना संभव नहीं होगा।

**सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम + पोस्टाफिस = कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208. मोबाइल - 9451048508, 9369255051 ई मेल - babbasateesh@gmail.com**